दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/17-HL-**HL4**

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): विक्रम [illegible]

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 27/08/17

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]:

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature):

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided into two **SECTIONS**.*

*Candidate has to attemp **FIVE** questions in all.*

*Questions Nos. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, **THREE** are to be attempted choosing at least ONE from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answers must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Word limit in questions, if specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum- Answer book must be clearly struck off.

Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 137½

टिप्पणी (Remarks): उत्तर अच्छे हैं। प्रयास करते रहें।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

SECTION 'A'

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजिये: 10 × 5 = 50

(क) हरिमुख निरखि निमेख बिसारे।
ता दिन तें मनो भए दिगंबर इन नैनन के तारे।।
घूँघटपट छाँड़े बीथिन महँ अहनिसि अटत उघारे।।
सहज समाधि रूपरुचि इकटक टरत न टक तें टारे।।
सूर, सुमति समुझति, जिय जानति, ऊधो! बचन तिहारे।
करै कहा ये कह्यों न मानत लोचन हठी हमारे।।

संदर्भ एवं प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ भक्तिकालीन महाकवि सूरदास की रचना 'सूरसागर' के 'भ्रमरगीत सार' से ली गई है। गोपियां तथा उद्धव के संवाद को वर्णित किया गया है।

व्याख्या - गोपियाँ श्री कृष्ण को याद करते हुए कहती हैं

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) फिरि फिरि चितु उत ही रहतु, टुटी लाज की लाव।
अंग-अंग-छबि-झौरँ मै भयौ भौरे की नाव।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ एवं प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ रीतिकालीन कवि 'बिहारी लाल' की रचना 'बिहारी सतसई' से ली गई हैं। इसमें नायिका की विरह दशा को तथा उसकी क्या स्थिति है उसको बताया गया है।

व्याख्या - नायिका कहती है कि अब मेरा ध्यान अपने नायक की ओर ही लगा रहता है तथा लोक लाज को तो मैंने छोड़ ही दिया है। उसकी याद में या वियोग में मेरी स्थिति तो भंवर की नाव जैसी हो गयी है जैसे ऐसी नाव की कोई दिशा नहीं होती वैसी ही स्थिति मेरी हो गयी है।

विशेष -

(1) रीतिकाल में कविता के केंद्र में लोक नायक तथा नायिका है तथा साधारणीकरण पात्रों का हुआ है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(2) भ्रमर की चाल से नायिका की तुलना करके उपमा अलंकार की व्यंजना की गई है।

(3) भाषा की दृष्टि से ब्रजभाषा का प्रयोग हुआ है

(4) इन पंक्तियों में वियोग शृंगार को दिखाया गया है।

(5) फिरि-फिरि में पुनरुक्ति अलंकार है।

5/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) रावण अशुद्ध होकर भी यदि कर सका त्रस्त
तो निश्चय तुम हो सिद्ध करोगे उसे ध्वस्त;
शक्ति की करो मौलिक कल्पना, करो पूजन,
छोड़ दो समर जब तक न सिद्धि हो, रघुनन्दन!

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ तथा प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ छायावाद के प्रतिनिधि कवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की प्रसिद्ध कविता 'राम की शक्तिपूजा' से ली गई हैं। ये वचन जाम्बवान के द्वारा भगवान राम से कहे गये हैं।

व्याख्या - जब राम अन्याय जिधर है उधर शक्ति से परेशान होते हैं तो जाम्बवान उन्हें उपाय देते हैं कि आपको शक्ति की मौलिक कल्पना करनी चाहिए तथा बताते हैं कि यदि रावण अनैतिक होकर भी यदि शक्ति प्राप्त कर सकता है तो आप उस शक्ति को क्यों नहीं प्रदान प्राप्त कर सकते। वह कहते हैं हे प्रभु जब तक शक्ति की सिद्धि न हो जाये तब तक आप रण के मैदान को छोड़ दें।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

विशेष -

(1) खड़ी बोली का परिष्कृत रूप इन पंक्तियों में दिखता है।

(2) 'शक्ति देर' का प्रयोग - जो कि निराला का नवीन प्रयोग है।

(3) यह पंक्तियाँ एक साथ कई बातों पर चोट करती है कि गांधी की नयी शक्ति चेतना की व्याख्या, निराला के आत्मदर्शन में फिर से उठने की चेष्टा आदि।

(4) शक्ति का ~~अनैतिकता~~ जन से जुड़ाव है तो निराला ~~कहकर~~ शक्ति नैतिकता से जुड़े की बात कही गयी है।

(5) शक्ति पूजा यद्यपि योग साधना के द्वारा की गई यहाँ पर पूजन का संकेत - दोनो को मिलाया है।

5½/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) काम-मंगल से मंडित श्रेय, सर्ग इच्छा का है परिणाम,
तिरस्कृत कर उसको तुम भूल बनाते हो असफल भवधाम।
दुःख की पिछली रजनी बीच विकसिता सुख का नवल प्रभात,
एक परदा यह झीना नील छिपाये है जिसमें सुख गात।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ एवं प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ छायावाद के महाकाव्य 'कामायनी' के श्रद्धा सर्ग से ली गई हैं। इसकी रचना जयशंकर प्रसाद ने की है। इन पंक्तियों में श्रद्धा मनु को जगत की वास्तविकता के बारे में बताती है।

व्याख्या - श्रद्धा मनु को संबोधित करती हुई कहती है कि काम या यौन चेतना मंगलकर्मों से मंडित है तथा नारी- पुरुष का मिलन सृष्टि का सत्य है तथा इच्छा का परिणाम है। यदि आप इस काम भावना को त्यागकर दूर रहते हैं तो आपकी यह भूल है तथा उसके बाद जो भी रचना होगी वह असफल ही मानी जायेगी।

देव सभ्यता के नष्ट हो जाने के बाद दुख की पिछली रात बीत चुकी है अब दुख सभी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नव प्रभात का उदय हुआ है। यह परदा जो

गिरा हुआ है अपने पीछे न जाने कितने पुंजों को

छुपाए हुए है इसलिए मनु अब वास्तविकता को

समझो ये प्रकृति ही सत्य है।

विशेष -

(1) प्रसाद पर कामायनीकार का काफी प्रभाव है 'काम - मंगल से मंडित श्रेय' में यह दिखता है।

(2) प्रकृति वादी चेतना जो कि छायावाद का आधार है इन पंक्तियों में स्पष्ट दिखती है।

(3) इसका एक अर्थ तत्कालीन भारत से भी जुड़ता है कि पहले जो हुआ सो हुआ जग उठकर नये भारत की नींव डालो।

(4) भाषा तत्समी है क्योंकि प्रसाद भाषायी प्रयोगों के धनी हैं तथा कविता की जरूरत भी।

(5) पिछली, झीना जैसे तद्भव शब्द भी आये हैं।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) "धिक् जीवन को जो पाता ही आया विरोध,
धिक् साधन, जिसके लिये सदा ही किया शोध!
जानकी! हाय, उद्धार प्रिया का हो न सका।"
वह एक और मन रहा राम का जो न थका;

संदर्भ एवं प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ छायावादी कवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की महाकाव्यात्मक औदात्य से परिपूर्ण कविता 'राम की शक्ति पूजा' से ली गई हैं। यह पंक्तियाँ कविता के अंतिम हिस्से की है जब शक्ति पूजा का अंतिम इंदीवर माँ दुर्गा उठा ले जाती है तो राम धिक्कार की भावना से भर जाते हैं।

व्याख्या - भगवान राम यहाँ पर धिक्कार भावना से भरकर कहते हैं कि इस जीवन पर धिक्कार है कि जो हमेशा विरोधाभासी स्थिति में ही रहा जबकि इस जीवन को सफल बनाने के लिए क्या न क्या साधन जुटाये। फिर वह सीतामुक्ति की इच्छा से व्यथित होते हैं और कहते हैं कि लगता है अब सीता का उद्धार न हो सकेगा परन्तु

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वह तुरन्त अपने राजीनामा होने की बात को याद करते हैं तभी संकेत आया है कि वह एक ओर मन रहा जो हार मानने को तैयार नहीं है।

विशेष -

(1) सरोज स्मृति में भी निराला होते ही टूटे हैं जब वह पुत्री की मृत्यु एवं आर्थिक - साहित्यिक स्थिति से परेशान है - "दुख ही जीवन की कथा रही क्या कहूँ आज जो नहीं कही।"

(2) यहां पर नारी को प्रिया कहा है जो उनकी साहित्यिक चेतना का परिचायक है।

(3) इस पंक्तियों में तत्सम कल्पनात्मक औदात्य से परिपूर्ण खड़ी बोली का प्रयोग किया है।

(4) शक्ति छंद का प्रयोग

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'राम की शक्ति पूजा' के आधार पर निराला की भक्ति-भावना का विवेचन कीजिये। 20

राम की शक्तिपूजा पौराणिक आख्यान के ढाँचे में रची गई कविता है। इसमें एक साथ कई अर्थ उभरते हैं जो इस कविता को शक्तिचेतना, निराला के आत्मसंघर्ष, नारीमुक्ति से जोड़ते हैं।

इस कविता के आधार पर निराला की भक्ति भावना को भली भाँति समझा जा सकता है।

निराला ने छायावाद की प्रवृत्ति के अनुरूप अपने काव्य में प्रकृति को बहुत अधिक महत्व दिया है यहाँ पर इनकी भक्ति भावना प्रकृति के रूप में दिखायी देती है तथा इन्होंने पार्वती की कल्पना भूधर के रूप में तथा शक्ति के वाहन सिंह की कल्पना समुद्र के रूप में की है –

"देखो बन्धुवर, सामने स्थित जो यह भूधर
पार्वती कल्पना है इसकी।"

इस कविता में शक्ति की पहचान आंतरिक शक्ति के रूप में की गई है जो बाह्य शक्ति से

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भिन्न है तथा शक्ति से अंतिम रूप से जुड़ती है।
जब शक्ति रावण के साथ ही तो वह रावण को अंक में लिये है परन्तु राम के संदर्भ में मुख में लीन हो जाती है –

"होगी जय होगी जय हे पुरुषोत्तम नवीन
कह महाशक्ति राम के वदन में हुई लीन।"

इसका एक पक्ष यह भी है कि हनुमान में शक्ति, दुर्गा से उभरा है परन्तु बंगाल की पृष्ठभूमि में इसे स्वीकारना कठिन था।

निराला योग मार्ग से जुड़े रहे हैं जिसे इस कविता में दिखाया गया है कि शक्ति को जाग्रत करने के लिए भक्ति के साथ यह योग का मार्ग भी चुना जाती है –

"क्रम से क्रम पार हुए साधन के पंचदिवस
चक्र से चक्र चढ़ता गया मन ऊर्ध्व निरलस।"

इस प्रकार निराला की भक्ति-भावना के विविध रूप हमें दिखायी पड़ते हैं जो शक्ति

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

प्रजा में पूरी संलिप्तता के साथ निपटना हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) निराला के आत्मसंघर्ष के परिप्रेक्ष्य में 'राम की शक्तिपूजा' पर प्रकाश डालिये। 15

राम की शक्तिपूजा की महत्ता इसी में है कि कविता किसी एक विषय से नहीं जुड़ती अपितु कई पक्षों को अपने से जोड़ती हुई चलती है। इसका एक पक्ष निराला के आत्म संघर्ष से भी जुड़ता है।

निराला सात्विक प्रेम के कवि हैं तथा उनकी पत्नी मनोरमा देवी की मृत्यु के बाद जब पुत्री सरोज का भी देहावसान हो गया तो उन्होंने 'सरोज स्मृति' में इसकी मुक्ति की तो 'राम की शक्तिपूजा' में नारी शक्ति जो इनके नारी चेतना के प्रति लगाव को दर्शाता है जिस वह कहते हैं "जानकी हाय। उद्धार प्रिया का हो न सका तो पत्नी प्रेम स्पष्ट ही आता है।

निराला अपने जीवन में आर्थिक संघर्ष करते रहे तथा साहित्यिक जगत में भी उनको प्रतिष्ठा नहीं मिली जिससे वह काफी हताश नजर आते हैं वास्तव में जब राम कहते हैं—

'धिक जीवन को जो पाता ही आया विरोध
धिक साधन जिसके लिए सदा ही किया शोध'

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'अन्याय जिधर है उधर शक्ति' तथा 'रवि हुआ अस्त' वास्तव में निराला के ही व्यक्तित्व को तथा परिस्थितियों को उजागर करती हैं।—

'है अमानिशा उगलता गगन घन अंधकार' जैसी स्थिति न सिर्फ राम के जीवन की अपितु निराला के जीवन की भी है। एक अन्य पक्ष ये भी है कि निराला का व्यक्तित्व विशालकाय था ऐसी ही छवि राम की भी दिखायी गई है जो नोकों के कंधों तक विस्तृत छवि के रूप में है।

निराला योग मार्ग से जुड़े थे तथा राम जब 'क्रम से क्रम पार हुए साधन के पंच दिवस' तो उसमें वास्तव में निराला जी की ही योग साधना को व्यक्त किया गया है।

स्पष्ट है कि शक्तिपूजा में निराला स्वयं व्यक्त हुए हैं परन्तु इनके बावजूद सत-असत संघर्ष, शक्ति चेतना, नारी शक्ति आदि के साथ कविता का जुड़ाव निरन्तर बना रहता है।

8½/14

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) "भारत-भारती में निहित नवजागरण चेतना की सीमाओं का उद्घाटन कीजिये। 15

भारत-भारती 1912 में राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त द्वारा रचित कविता है। इस कविता की प्रसिद्धि उद्बोधन परक काव्य के रूप में है तथा नवजागरण चेतना की भावना से ओत प्रोत है जैसे- अतीत के प्रति लगाव, राष्ट्र प्रेम, वर्तमान विरूपताओं पर चोट तथा भविष्य के संकेत इसमें विद्यमान हैं।

परन्तु इसके साथ ही नवजागरण (दो संस्कृतियों की टकराहट से उत्पन्न सकारात्मक ऊर्जा) की कई सीमाओं को यह व्याख्या करती है—

— यह रचना हिंदु केन्द्रित है तथा इसमें मुस्लिम समाज के प्रति कुछ विपरीत वचन आये हैं तथा मध्यकाल को अंधकार काल एवं प्राचीन भारत का महिमामंडन किया है।

जिससे मुस्लिम समाज अपने को इससे जोड़ नहीं पाया।

— पुरुष केन्द्रित होना इसकी दूसरी सीमा है क्योंकि

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

इसमें केवल उसी नारी का सम्मान किया गया है जो पुरुष के लिए न्यौछावर हो जाये वास्तव में यह नारी के स्वत्व की कीमत पर ही है।

— तीसरा यह रचना आर्य संस्कृति का बखान तो करती है परन्तु द्रविड़ तथा दलित भारत को अपने में समाहित नहीं कर पाती।

— इसमें कहीं-कहीं अंग्रेजों की अतिशय प्रशंसा का भाव भी दिख जाता है तो इसको सीमा के रूप में प्रस्तुत करता है।

इस प्रकार उपर्युक्त सीमाएँ भारत-भारती में दिखायी पड़ती हैं। परन्तु इसके बावजूद उद्बोधनपरक काव्य तथा प्रसाद गुण शैली को पैदा करने एवं हिन्दी भाषा को प्रचार करने के कारण इसे 'हिंदी की गीता' कहा है।

8/15

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) 'कामायनी मानव-मन एवं मानवता के विकास की कहानी है।' इस मत के संदर्भ में कामायनी का विवेचन कीजिये। 20

कामायनी 1936 में 'जयशंकर प्रसाद' द्वारा रचित महाकाव्य (भाव प्रधान) है। यह रचना अपने रचनाकाल से लेकर आज तक काव्यजगत में उत्कृष्टता को धारण करती है क्योंकि इसमें मिथक का ऐसा सुन्दर प्रयोग किया गया है जो पूरी मानवता की कहानी को कह देता है साथ ही अपने समय के यथार्थ को धारण भी करती है।

कविता यहाँ से शुरू होती है जहाँ पर 'एक पुरुष भीगे नयनों से' प्रलय प्रवाह को देख रहा था वास्तव में यह मानव मन की यात्रा का प्रस्थान बिंदु है जो किसी घटना के प्रति चिंता को व्यक्त करता है इसलिए पहला सर्ग ही 'चिंता सर्ग' है क्योंकि चिंता होने से ही सोच विकास के मार्ग खुलते हैं इसी प्रकार चिंता का आगे विस्तार होता है।

'चिंता' के बाद आशा, काम, वासना,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

श्रद्धा, बुद्धि, निर्वेद, आनंद आदि सर्गों की स्थापना की गई जो वास्तव में मानव मन के ही पहलू हैं।

इसके अतिरिक्त 'हिमगिरि ---- बैठ शिला की शीतल छांह' में मनु चिंतित रूप से 'देव सभ्यता' के ध्वंस को याद कर रहे हैं जो अतिशय भोग का परिणाम था। फिर इनका परिचय श्रद्धा से होता है जो इन्हें चिंता से निकालकर जगत की ओर ध्यान लगाती है उससे इन्हें प्यार होता है। परन्तु पुनः अधिकार भावना जाग जाती है जिससे गर्भवती श्रद्धा को छोड़कर मनु चले जाते हैं तथा इड़ा के साथ मिलकर प्रकृति का दोहन एवं विकास करते हैं परन्तु पुनः अधिकार भावना जागने के कारण पराजित होते हैं।

अंत में श्रद्धा इनको बताती है कि जीवन का वास्तविक सार "ज्ञान दूर कुछ क्रिया भिन्न है" में है तथा इच्छा, क्रिया एवं ज्ञान के सामंजस्य से ही आनंद की स्थिति प्राप्त हो सकती है और उसके प्रभाव से तीनों लोकों में सामंजस्य स्थापित होता है तथा फिर

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

मनु हिमालय पर ही तीन दृश्यों की सेवा करते हैं।

इस प्रकार यह कृति की पूरी कहानी मानवता के विकास को ही संबोधित है। तथा इसके माध्यम से मानव जीवन को समझा जा सकता है।

और बेहतर बनाएँ

10½/20

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) अंगीरस की दृष्टि से कामायनी पर विचार कीजिये। 15

अंगीरस वह होता है जो रचना का मुख्य रस हो इसका निर्धारण -

अंगीरस
- बहुल्याप्ति के आधार पर
- परिणति के आधार पर
- प्रमुख पात्र के आधार आधार पर

बहुल्यता के दृष्टि से कामायनी में 2 रस है शृंगार, शांत।

शृंगार रस में संयोग शृंगार मनु तथा श्रद्धा के मध्य है तथा इड़ा एवं मनु में यह प्रारंभ होने से पूर्व ही समाप्त हो गया है, इससे वियोग शृंगार ही ज्यादा दिखाई पड़ता है। किन्तु शृंगार इतना भी नहीं कि ये अंगीरस बन सके क्योंकि अंत में न केवल अनुपस्थित है अपितु गौर जल्दी भी लगने लगता है।

शांत के दो भेद माने गये है निर्वेद मूलक शांत तथा शममूलक शांत। निर्वेद मूलक शांत रस वह है जब व्यक्ति थककर, हारकर, हताश होकर, निराशा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

से शांत हो जाये यदि यह रचना 'निर्वेद' सर्ग तक समाप्त हो जाती तो वो अंगीरस माना जा सकता था परन्तु यह 'आनंद सर्ग' की ओर आगे बढ़ जाती है।

शममूलक शांत रस वह है जो न केवल एक रस है अपितु सभी रसों की जननी है सभी रस इसी से उद्भूत तथा इसी में तिरोहित हो जाते है यह राग-द्वेष, इच्छा-अनिच्छा, भय, साहस आदि से ऊपर की स्थिति है।

अगर हम समग्र निरीक्षण करें तो परिणति के आधार पर ही अंगीरस का निर्धारण किया जा सकता है जो 'आनंद सर्ग' के आधार पर 'आनंदमूलक शांत रस' है क्योंकि यह न केवल अंत में उपस्थित है अपितु विभिन्न पात्रों में भी दिखता है जैसे श्रद्धा का चरित्र, मनु की अंतिम दशा आदि।

9/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ग) शक्ति-काव्य के प्रतिमान के रूप में 'राम की शक्ति-पूजा' पर विचार कीजिये। 15

निर्मला जैन ने अपने प्रसिद्ध लेख 'शक्ति काव्य का प्रतिमान: राम की शक्तिपूजा' में कहा है कि 'राम की शक्तिपूजा' कविता की केंद्रीय संवेदना शक्ति चेतना ही है। यह न केवल इसके नाम से स्पष्ट है अपितु रचना के मोड़ पर इसे देखा जा सकता है।

"रवि हुआ अस्त" का तात्पर्य ही है कि शक्तिहीनता से शुरुआत कविता की हुई है जो राम की शक्ति की कमजोरी के रूप में दिखती है। इसके साथ ही "अन्याय जिधर है उधर शक्ति" एक साथ कई बिंदुओं पर जोर करती है भारत में अंग्रेजी सत्ता का होना, निराला का आर्थिक संकट, असत्य की विजय, नारी पराधीनता आदि

फिर कविता में शक्ति को प्राप्त करने का प्रयास शुरु होता है और जाम्बवान सलाह देते हैं –

"शक्ति की करो मौलिक कल्पना करो पूजन
छोड़ दो समर जब तक सिद्धि न हो रघुनन्दन"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसके बाद राम शक्ति की पूजा प्रारंभ करते हैं वह शक्तिपूजा अपने भीतर सोयी हुई शक्ति की चेतना को जगाने का प्रयास है इसलिए योग साधना के द्वारा पूजा —

" क्रम क्रम से पार* हुए साधन के पंच दिवस
चक्र से चक्र चढ़ता गया मन ऊर्ध्व निरलस।"

यह भी कहा जा सकता है कि यहाँ शक्ति की पूजा प्रकृति चेतना के साथ की गई है जैसे- पार्वती की कल्पना पर्वत के रूप में की गई है।

इसका एक पक्ष इस बात से भी जुड़ा है कि जब महाशक्ति अनैतिकता के पक्ष में है तो वह 'महाशक्ति रावण को लिये अंक' गोद में लेकर बैठी है परन्तु राम के संपर्क में या पक्ष में शक्ति राम के मुख में लीन हो जाती है। अर्थात साथ के पक्ष में शक्ति आंतरिक भावना के साथ जुड़ती है।

इस प्रकार शक्ति चेतना को नवल रूप से कविता में दिखाया गया है तब भी यह कहते

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

में कोई संकोच नहीं है कि इसकी संवेदना अन्य बिन्दुओं से स्पष्ट जुड़ती है।

ठीक है।

9/15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'B'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके रचनात्मक-सौंदर्य का परिचय दीजियेः 10 × 5 = 50

(क) केवल नाराज़ ही नहीं, लड़ता था बाकायदा हमसे कि आप से पढ़े लिखे लोग खाली तमाशबीन ही बनकर बैठे रहेंगे तो इन गरीबों की लड़ाई कौन लड़ेगा? जहाँ दिन-दहाड़े इतना जुलुम होता हो, वहाँ कोई कैसे अलग-थलग बैठकर खाली कागज पोतता रह सकता है।

संदर्भ - 'महाभोज' राजनीतिक समस्याओं पर केन्द्रित 'मन्नू भंडारी' का कालजयी उपन्यास है उपर्युक्त पंक्तियाँ इसी उपन्यास से ली गई हैं।

प्रसंग - इन पंक्तियों में बुद्धिजीवी वर्ग की समीक्षा की गई है तथा महेश बताता है कि बिसू की क्या स्थिति थी वह पढ़े लिखे लोगों के बारे में क्या सोचता था?

व्याख्या - वह कहता है कि आज गरीबो, दलितों एवं वंचितो पर इतनी बेरहमी, अत्याचार तथा भ्रष्टाचार हो रहा है तो पढ़ा लिखा आदमी कैसे शांत रह सकता है अगर बुद्धिजीवी लोग ही गरीबों की आवाज नहीं उठायेंगे तो भला कौन लड़ेगा इन आततायी शक्तियों से। जब हमारे समाज के एक वर्ग

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पर इस प्रकार की घटनाएं होती हो तो भला कलम चलाने वालों को क्या शांत बैठना चाहिए? या केवल कपोल कल्पित कल्पनाओं में ही मग्न रहना चाहिए?

विशेष -

(1) इसी प्रकार बुद्धिजीवी वर्ग की समीक्षा भारतेन्दु ने 'भारत दुर्दशा' में की है कि यह वर्ग कितना हीन-हीन बन पड़ा है।

(2) कवि या लेखक से अपेक्षा होती है कि वह अपनी कलम को जनता की आवाज बनाये - प्रगतिवाद में भी लेखकों से यही अपेक्षा की जाती है।

(3) भाषा संबंधी प्रयोग सहज हैं क्योंकि खड़ी बोली इस समय तक परिष्कृत रूप में आ गई थी।

(4) 'कागज पोतना' जैसे मुहावरे का प्रयोग किया गया है।

(5) दिखाया गया है कि दलित वर्ग एवं किसान आदि जन आंदोलित हो सकता है तो साहित्य क्यों नही?

6/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) प्रत्येक परमाणु के मिलने में एक सम है, प्रत्येक हरी पत्ती के हिलने में एक लय है। मनुष्य ने अपना स्वर विकृत कर रक्खा है, इसी से तो उसका स्वर विश्व-वीणा में शीघ्र नहीं मिलता। पांडित्य के मारे जब देखो, जहाँ देखो बेताल-बेसुरा बोलेगा। पक्षियों को देखो, उनकी 'चहचह', 'कल-कल', 'छलछल' में, काकली में, रागिनि है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ महान नाटककार जयशंकर प्रसाद के नाटक 'स्कंदगुप्त' से ली गई है स्कंदगुप्त ऐतिहासिक उपन्यास है।

प्रसंग - इन पंक्तियों में प्रकृति का वर्णन तथा उसकी संगीतमयी एवं रागमयी चेतना को उपस्थित किया गया है जो लेखक पर छायावाद का प्रभाव दर्शाता है।

व्याख्या - प्रकृति के पदार्थ के प्रत्येक परमाणु तथा पत्तियों, कोपलों आदि में एक विशिष्ट लय है लेखक बताना चाहता है कि प्रकृति अपने स्वतंत्रता के कारण कितनी विशिष्ट है परन्तु इसी के साथ मानव पर चोट भी की गई है कि मनुष्य ने अपनी आवाज को कर्कश बना रखा है तथा वह इसके पर आक्षेप-प्रतिक्षेप ही करता रहता है जिससे उसकी आवाज विश्व प्रेम के साथ सामंजस्य नहीं बिठा पाती।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पशु, पक्षी, जंतु आदि अपनी स्वतंत्र एवं स्वच्छंद चेतना के कारण निरन्तर राग में व्यस्त रहते हैं।

विशेष -

(1) प्रकृति का ऐसा रूप एवं वर्णन हमें छायावाद में देखने को मिलता है प्रसाद तो छायावाद के प्रसिद्ध साम्भकार हैं।

(2) प्रकृति हमें स्वधर्म एवं स्वतंत्रता के साथ जीना सिखाती है जिसका संकेत इन पंक्तियों में है।

(3) 'चहचह', 'कल-कल', 'छलछल' में ध्वन्यात्मक के दर्शन होते है जो लेखक की भाषा संबंधी प्रयोगों पर पकड़ को दर्शाता है।

(4) मानव अपने अहं तथा घमण्ड में चूर रहकर कुछ नहीं कर सकता यदि उसे आगे बढ़ना है तो नये प्रयोग तथा अपने को प्रकृति अनुरूप ढालना होगा।

6/10

(5) प्रकृति का यह कल-कल, छल-छल रूप हमें स्वच्छन्दतावाद की याद दिलाता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हा! भारतवर्ष को ऐसी मोह निद्रा ने घेरा है कि अब इस के उठने की आशा नहीं। सच है, जो जान-बूझकर सोता है उसे कौन जगा सकेगा? हा दैव! तेरे विचित्र चरित्र हैं, जो कल राज करता था वह आज जूते में टाँका उधार लगवाता है।

संदर्भ - भारतेन्दु हरिश्चंद्र जी ने 1875 में एक लघु नाटक 'भारत-दुर्दशा' की रचना की जिसमें तत्कालीन भारत की विद्रूपता को दर्शाया उपर्युक्त पंक्तियाँ उसी उपन्यास से उद्धृत हैं।

प्रसंग - इन पंक्तियों में बताया गया है कि भारत की दुर्दशा को बताया गया है साथ नवजागरण चेतना के आलोक में पहले भारत कैसा था इसका भी संकेत।

व्याख्या - लेखक बताता है कि जो व्यक्ति जानबूझकर सोता है भला उसको कौन उठा सकता है क्योंकि वह ऐसा अपनी शक्ति की कमी के कारण नहीं अपितु आलस्य, निद्रा, अंधविश्वास, भाग्य आदि के भरोसे रहकर हुआ है। ऐसे व्यक्ति के जागने की कोई आशा नहीं। वह भारत आज जो सो रहा है कभी पूरे विश्व का राजा था

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसे 'जगद् गुरु' तथा 'विश्व आचार्य' की पदवियाँ दी जाती थी आज इसकी स्थिति अत्यधिक दयनीय व निकृष्ट है।

विशेष –

(1) नवजागरण की चेतना की उपस्थिति दिखती है क्योंकि प्राचीन भारत कैसा सशक्त था इसका वर्णन किया गया है।

(2) भारत-भारती के अतीत खंड में भी कवि मैथिली ने भारत को विश्व का नेता बताया था।

(3) भाषा की दृष्टि से खड़ी बोली गद्य का प्रयोग किया गया है यह समय भाषायी द्वैत का समय था गद्य में खड़ी बोली तथा पद्य में ब्रज।

(4) हा, अहा जैसे शब्दों का प्रयोग जान बूझकर स्थिति को संकटपूर्ण दिखाने के लिए।

(5) एक तरफ भारत को राजा तथा दूसरी तरफ उधार का टुकड़ा लगवाने से कन्ट्रास्ट दिखाकर सोये जनमन को जगाने का प्रयास किया गया है

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) ऐसा आतंक आपने कहीं देखा नहीं होगा, साहब! लोगों के घर, ज़मीन और गाय-बैल ही रेहन नहीं रखे हुए हैं जोरावर और सरपंच के यहाँ, उनकी आवाज़ और जबान तक बंधक रखी हुई है। कोई चूँ तक नहीं कर सकता है।

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ 'मन्नू भंडारी' के द्वारे उपन्यास 'महाभोज' से ली गई है यह उनका स्वतंत्र भारत की राजनीतिक समस्याओं पर केन्द्रित है।

प्रसंग - इन पंक्तियों में यह दिखाने का प्रयास किया गया है कि उच्चवर्ग एवं शक्तिशाली लोग किस प्रकार अभिव्यक्ति को दबा देते हैं।

व्याख्या - जोरावर जो कि एक बाहुबली एवं उच्च वर्ग का व्यक्ति है वह किस प्रकार गाँवो वालो विशेषकर वंचित वर्ग का शोषण करता है। इसमें आर्थिक तथा मनोवैज्ञानिक दोनों ही गुलामी को दिखायी गया है आर्थिक स्तर पर वंचना के शिकार लोगों के घर, गाय, जमीन जोरावर जैसे उच्चवर्गों के पास गिरवी पड़े रखे हैं वही मनोवैज्ञानिक दृष्टि से अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता तक नहीं है वह मौन तक

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

नहीं सकेत उनके खिलाफ।

विशेष -

(1) आजाद भारत में कैसे गांवो में उच्चवर्ग निम्न वर्ग का शोषण करता है उसकी मुखर अभिव्यक्ति हुई है।

(2) इस शोषण में केवल व्यक्ति ही नहीं बल्कि पंचायतो के संरक्षक अर्थात राजनीतिक संस्थाएं भी शामिल हैं।

(3) ऐसा ही चित्र आजादी के पहले भी का चित्र गोदान में प्रेमचंद ने दिखाया है।

(4) कमोबेश आज भी भारत के अधिकांश गाँव दलितो के शोषण के अड्डे हैं।

(5) इन पंक्तियों में खड़ी बोली के सहज प्रवाह देखा जा सकता है - 'चूं तक नहीं करता' लोक प्रचलित वाक्यो का प्रयोग हुआ है।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ड़) यह तुम नहीं, तुम्हारा स्वार्थ बोल रहा है। स्वार्थ को इतनी छूट देना ठीक नहीं कि वह विवेक को ही खा जाए। अखबारों को तो आज़ाद रहना ही चाहिए। वे ही तो हमारे कामों का, हमारी बातों का असली दर्पण होते हैं। मेरा तो उसूल है कि दर्पण को धुंधला मत होने दो। हाँ, अपनी छवि देखने का साहस होना चाहिए आदमी में।

संदर्भ एवं प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ मन्नू भंडारी के राजनीतिक उपन्यास 'महाभोज' से ली गई हैं। इसमें पत्रकारिता की आवाज को स्वतंत्र रहने की बात की गई है।

व्याख्या - महाभोज के मुख्य किरदार दा साहब कहते हैं कि आप स्वार्थ वश होकर पत्रकारिता का मुँह बंद करना चाहते हो परन्तु ये समाचार पत्र एवं मीडिया ही तो असली दर्पण है जो जगत की सच्चाई को सबके सामने रखता है। वह कहते है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी छवि को देखने का साहस अवश्य होना चाहिए क्योंकि इससे उसे अपनी करतूतों का पता चलता है।

विशेष -

(1) पत्रकारिता की आजादी तथा व्यक्तित्व के सामने

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रेम का प्रश्न प्रेमचंद ने गोदान में ओमकारनाथ के माध्यम से उठाया है।

(2) आज भी सर्वेसर्वा पत्रकारिता तथा मीडिया को नियंत्रित करने की कोशिश करते हैं।

(3) इसी के साथ 'निंदक नीरे राखिये' पंक्ति में कही सारी बात अन्तिम पंक्ति से मेल खाती है कि व्यक्ति में अपने चरित्र को परखना हो तो आलोचना सुनने का साहस होना ही चाहिए

(4) स्वार्थ किस हद तक व्यक्ति को गिरा देता है कि वह अपने को तो गंदा करता है दूसरे से भी अपने अनुसार होने की अपेक्षा करने लगता है।

6/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) "लेखक ने कला के अनुराग से काल्पनिक चित्र में ऐतिहासिक वातावरण के आधार पर यथार्थ का रंग देने का प्रयास किया है।" -दिव्या के संबंध में अपनी इस स्वीकारोक्ति के निर्वाह में यशपाल कहाँ तक सफल हो गए हैं? युक्तियुक्त उत्तर दीजिये। 20

'दिव्या' यशपाल का नायिका केन्द्रित उपन्यास है तथा उन्होंने इस उपन्यास में काल्पनिक चित्र में ऐतिहासिक वातावरण के आधार पर यथार्थ को रूप दिया है।

प्राक्कथन में कहे गये उनके कथन से स्पष्ट है कि दिव्या में कल्पना प्राथमिक है तथा इतिहास गौण। वास्तव में कोई रचनाकार कल्पना का प्रयोग कितना करता है यह उसके इतिहासबोध से तय होता है उनका स्पष्ट कथन है 'इतिहास जानने की वस्तु नहीं, निरीक्षण की वस्तु है।'

ऐतिहासिक वातावरण को उत्पन्न करने के लिए उपन्यासकार ने 3 जीवन तथा 3 नगरों का ऐतिहासिक संदर्भ में सहारा लिया है।

चरित्रों के स्तर पर पुष्यमित्र, मिलिंद तथा पंतजलि के नाम आये हैं परन्तु तीनों ही नाटक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

में उपस्थित नहीं हैं अपितु संकेत भर आया है।

पुष्यमित्र ने मगध में 185 ई॰ पू॰ में सत्ता स्थापित की तथा ब्राह्मण समर्थक होने के कारण वर्णव्यवस्था के उन्नयन के प्रयास किये थे। आचार्य रुद्रदत्त को जब राज्य से निकाला जाता है तो उन्हें मगध जाने की सलाह दी जाती है वास्तव में रुद्रदत्त यहां पर पुष्यमित्र का ही प्रतीक बनकर आया है।

मिलिंद ने पश्चिमोत्तर भारत में शासन स्थापित किया था तथा उसका जिक्र उपन्यास में इसी रूप में आया है वह भी प्रत्यक्षतः उपस्थित नहीं। इसी प्रकार पंतजलि पुष्यमित्र के साथ मगध में थे उनका भी वर्णन वर्णव्यवस्था उद्धारक के रूप में ही आया है।

नगरों की दृष्टि से सागल तथा मथुरा उपस्थित हैं परन्तु दोनो का ही वर्णन इतिहास सम्मत है कि दोनो कला के केन्द्र, विहारों के स्थान, व्यापार-वाणिज्य में अग्रणी थे। इस प्रकार इनसे भी ऐतिहासिक वातावरण का सृजन हुआ है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

एक अन्य प्रयास यह भी हुआ है कि उस काल की तरह ही तत्सम शब्दावली तथा काल नह शब्दावली का प्रयोग जैसे - महानसाधिकृत, गजसंनाहक, स्थविर आदि।

इसी प्रकार काल्पनिक * चरित्र तो आते हैं ही, जिनसे ही उपन्यास का चित्र * तैयार हुआ है।

अन्ततः कहा जा सकता है कि इतिहास एवं कल्पना के सम्मिश्रण से तैयार 'दिव्या' उपन्यास लेखक की हिंदी साहित्य को अनुपम भेंट है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) नायकत्व की दृष्टि से 'मैला आँचल' पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मैला आँचल 'रेणु' जी का आंचलिक उपन्यास है जिसका वर्णन जिसे इन्होंने प्रस्तावना में ही कर दिया है - 'ये है मैला आँचल एक आँचलिक उपन्यास'। आंचलिक उपन्यासों की सर्वविदित विशेषता होती है कि इसमें नायकत्व किसी चरित्र विशेष को नहीं दिया जाता अपितु नायकत्व का दर्जा तो अंचल को ही मिलता है।

मैला आँचल में 256 चरित्र हैं परन्तु कोई नायक कहलाने की स्थिति में नहीं जैसे- कालीचरन, बालनदास, बालदेव आदि महत्वपूर्ण होते हुए भी इतने व्यापक नहीं कि नायक बन सकें वास्तव में उपन्यासकार की कोई ऐसी योजना भी नहीं है।

सभी चरित्र तथा घटनाएं अंचल के ही नायकत्व को उभारने में लगे हैं जिससे अंचल की एक स्पष्ट छवि उभरती है "जिसमें फूल भी है, धूल

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

भी हैं, मीलड़ भी है, कुरूपता भी मगर मैं किसी से दामन बचाकर नहीं निकल पाया।'

वास्तव में अंचल को नायकत्व देने के बाद लेखक ने इसके प्रत्येक पहलू को बखूबी उभारा है सर्वप्रथम भौगोलिक तथा सांस्कृतिक वर्णन किये हैं ताकि पाठक उस अंचल से जुड़ पाये जिसका मिल वह आगे देखने जा रहा है।

इसके साथ ही मेरीगंज की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक स्थिति का वर्णन किया है। सामाजिक स्थिति में जाति व्यवस्था, नारी का स्थान, मठ की स्थिति, अंध विश्वास एवं जातिय संघर्ष को दिखाया है तो आर्थिक स्थिति के अंतर्गत गरीबी, बिलत्व शासक अन्याय, बेरोजगारी, जहालत को दिखाया है।

राजनीतिक स्थिति में अपने समय के तीनों प्रचलित दल कांग्रेस, सोशलिस्ट पार्टी तथा संघ को दिखाया है इनकी अच्छाइयां एवं बुराइयां दोनों

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

ही जड़ों को उभारा है।

इस प्रकार मैला आँचल में नायकत्व का दर्जा तो अंचल को ही मिला है जो कि रेणु की योजना के अनुसार सफल सिद्धि है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'मैला आंचल' के नामकरण पर विचार करें। क्या आप इस उपन्यास का इससे बेहतर नाम सुझा सकते हैं?
15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

किसी भी रचना का नामकरण ऐसा होना चाहिए जिसे सुनकर उसकी संवेदना का चित्र पाठक के मन में मूर्त हो सके। इस स्थिति में नामकरण घटना प्रधान जैसे- आहत दुर्दशा, स्थिति/स्थिति प्रधान, या चरित्र प्रधान जैसे - दिव्या हो सकता है।

'मैला आंचल' नामकरण में इस उपन्यास की संपूर्ण विषयवस्तु स्पष्ट सामने अंकित हो जाती है। इसे हम विश्लेषण से समझ सकते है।

'मैला' विशेषण का प्रयोग रचनाकार ने जान बूझकर किया है क्योंकि जिस अंचल का वर्णन किया गया है वह अपनी तमाम संभावनाओं के बाद संभावनाओं से ही ज्यादा ग्रसित है यहाँ अंधविश्वास, धार्मिक रूढ़ियाँ, राजनीतिक पिछड़ापन इतना ज्यादा है कि यह अंचल मैला होने को अभिशप्त है।

दूसरा शब्द 'आंचल' के दो अर्थ है पहला है कि आंचल उस स्थानीयता का प्रतीक

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

है जिसका वर्णन लेखक करता है। इसके अर्थ में अंचल 'माँ का आँचल' के रूप में प्रयुक्त हुआ है जो हमें प्रेम, अनुभूति, करुणा, मुग्धता की ओर आकर्षित करता है ये आँचल चाहे मैला हो परन्तु हमें विशेष प्रिय होता है।

अब हम विचार कर सकते है कि इसके अन्य नाम क्या हो सकते थे पहली संभावना है कि 'मेरी गंज' या 'मेरीगंज की दुनिया' नाम हो सकता था परन्तु यह सार्थक नहीं क्योंकि पिछड़े गाँवो का प्रतीक नहीं बनता दिख रहे। इसके अतिरिक्त एक नाम 'पिछड़ा इलाका' हो सकता है परन्तु इसमें तो पूरा भाव ही बदल जाता।

अतः हम कह सकते हैं 'मैला आँचल' ही उपयुक्त नामकरण है जो इसकी पूरी संवेदना को पूरी मुखरता के साथ हमारे सामने प्रस्तुत करता है।

8½/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation